Dr. Nutiori Dubey
Assistant Professor
Dept of Philosophy
H.D. Jain College, Ara

U.G. Sem – IV
MJC – 05 : Western Philosophy
(Descartes : 'Soul')

'आत्मा'

डेकार्ट तत्वमीमांसीय दृष्टि से द्वैतवादी हैं क्योंकि वह आत्मा एवं अनात्मा दोनों को परस्पर विरोधी गुणों से युक्त मानता है। 'आत्मा' विचारशील और विस्तारशून्य है। इसके विपरीत 'अनात्मा' (जड़-द्रव्य) विचारशून्य एवं विस्तारवान है। यद्यपि आत्मा और जड़ द्रव्य सापेक्ष द्रव्य (Relative Substance) हैं तथापि वे ईश्वर के द्वारा रचित या सृष्ट द्रव्य हैं। अर्थात् वे ईश्वर से उत्पन्न और ईश्वर पर आश्रित द्रव्य हैं।

डेकार्ट 'चिंतन करना' आत्मा का अनिवार्य गुण मानते हैं। डेकार्ट के दर्शन में 'मैं' (I) और 'चिंतन' (Think) में अवियोज्य संबंध है। चिंतनशील होने के कारण 'मैं' (आत्मा) विभिन्न भौतिक वस्तुओं, यहाँ

तक कि अपने शरीर से भी नितान्त भिन्न है। मैं भौतिक शरीर नहीं हूँ बल्कि इसका स्वामी हूँ। इस प्रकार आत्मा की सत्ता शरीर से स्वतंत्र तथा भिन्न है। इसका ज्ञान स्पष्ट तथा विवेकपूर्ण है। डेकार्ट ने 'चिंतन करना' (Cogito) पद का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में किया है। इसके अन्तर्गत संशय करना, समझना, कल्पना करना, संकल्प करना, किसी चीज को स्वीकार या अस्वीकार करना इत्यादि सम्मिलित है। चूँकि चिंतन करना आत्मा का मुख्य व्यापार (क्रिया) है अतः आत्मा स्वतः सिद्ध है। यह एक प्रातिभ अनुभूति (Intuitive Experience) है। इसका अस्तित्व किसी परोक्ष प्रमाण (जैसे अनुमान) पर आधारित नहीं है।

डेकार्ट के अनुसार आत्मा जड़द्रव्य से भिन्न एक चिंतनशील द्रव्य है। चिंतनशील होने के कारण यह अचेतन द्रव्य से भिन्न गुण रखता है। जड़द्रव्य का प्रमुख गुण विस्तार और चेतन द्रव्य का प्रमुख गुण विचार है। आत्मा चेतन, सरल, अविनाशी और शरीर से भिन्न द्रव्य है। चूँकि आत्मा द्रव्य है इसलिए उसका नाश नहीं हो सकता है। द्रव्य अविनाशी है। जानना, संकल्प करना, सोचना, अनुभव करना इत्यादि आत्मा की विभिन्न क्रियाएँ हैं। आत्मा में किसी प्रकार का विस्तार नहीं पाया जाता है। वह देश और काल से परे है। यद्यपि डेकार्ट

की आत्मा संबंधी अवधारणा ईसाई धर्म की मान्यताओं से प्रभावित है तथापि उसने आत्मा को सिद्ध करने के लिए तर्क का सहारा लिया है। वह संदेह की प्रक्रिया से अपना चिंतन प्रारंभ करके यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि "मैं सोचता हूँ इसलिए मेरा अस्तित्व है।" चिंतन आत्मा का अनिवार्य लक्षण है जो उसकी सभी क्रियाओं में निहित होता है अथवा यह अन्य क्रियाओं का आधार है। जो चिंतनशील नहीं है वह आत्मा से रहित है। इससे सिद्ध होता है कि केवल मनुष्यों में ही 'आत्मा' पाया जाता है मनुष्येतर प्राणी (जैसे - पशु-पक्षी आदि) चिंतन से रहित होने के कारण आत्मा से रहित हैं।

डेकार्ट के अनुसार आत्मा के दो पक्ष हैं— सक्रिय पक्ष तथा निष्क्रिय पक्ष। सक्रिय पक्ष के अन्तर्गत आत्मा की वे क्रियाएँ आती हैं जो आत्म-नियंत्रित होती हैं तथा निष्क्रिय पक्ष के अन्तर्गत वे क्रियाएँ सम्मिलित हैं जो अपने शारीरिक कारणों पर निर्भर हैं। जैसे - हर्ष, क्रोध, विषाद इत्यादि अवस्थाएँ ~~ऐसे~~ भाव हैं जिसका प्रभाव आत्मा में दिखाई देता है। यदि 'मैं हूँ' और 'मैं कुछ सोच रहा हूँ' ये दोनों प्रकार के वाक्य भले ही एक ही अर्थ में साक्षात् रूप से अनुभूत होते हों, फिर भी इस दोनों वाक्यों के अभ्रान्त होने में अंतर है। 'मैं हूँ' का निषेध

नहीं किया जा सकता है क्योंकि ऐसा करना व्याघाती है, किन्तु 'मैं सोचता हूँ' का निषेध सार्थक रूप में किया जा सकता है। डेकार्ट के अनुसार 'मैं सोचता हूँ अतः मैं हूँ' यह पद कोई जटिल वाक्य नहीं, बल्कि एक सरल वाक्य है। यह कोई निगमनात्मक अनुमान नहीं बल्कि एक प्रातिभ ज्ञान है। इसके अस्तित्व का निराकरण नहीं किया जा सकता है। प्रश्न उठता है कि 'सोचने' (सारतत्व) और 'होने' 'अस्तित्व' में क्या संबंध है? डेकार्ट इसका स्पष्ट विवेचन नहीं करता है किन्तु डेकार्ट के दर्शन का विवेचन करने से स्पष्ट है कि उसके अनुसार 'होने' (सत्) और 'सोचने' (चित्) में द्रव्य और गुण का संबंध है। दूसरे शब्दों में आत्मा सत् और चिंतनशील है।

रूडोल्फ कार्नाप के अनुसार 'मैं सोचता हूँ', इसलिए मैं हूँ' इस वाक्य का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें तार्किक वाक्य विन्यास का पालन नहीं किया गया है। अस्तित्व का संबंध सदैव किसी न किसी विधेय से होता है। 'अस्तित्व' स्वयं कभी भी विधेय नहीं हो सकता है। अस्तित्ववाची वाक्य 'मैं सोचता हूँ' 'यह है' के समान नहीं है। 'मैं सोचता हूँ' से केवल यह सिद्ध होता है कि यह एक व्यक्ति है जो सोचता है। इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि मैं हूँ।

ए. जे. एयर के अनुसार 'जहाँ तक मैं सोचता हूँ, मैं विचार मात्र हूँ।' हम अपने क्षणिक विचारों को संकलित करके विचारों के प्रवाहरूप एक आत्मा की कल्पना कर लेते हैं। अतः डेकार्ट का सूत्र 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ' भी एक आगमनात्मक तर्क है। इसके द्वारा किसी निश्चित निष्कर्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है। वस्तुतः ए. जे. एयर की यह आपत्ति तार्किक भाववादी पूर्वाग्रहों पर आधारित है।

वास्तव में तार्किक भाववादी डेकार्ट के इस मन्तव्य की उपेक्षा कर देते हैं कि आत्मा (द्रव्य) के अभाव में चिंतन रूपी गुण का कोई आश्रय नहीं हो सकता है। डेकार्ट आत्म-ज्ञान को न तो आगमनात्मक अनुमान कहता है और न ही निगमनात्मक अनुमान मानता है। यह एक स्वतः सिद्ध मौलिक अनुभूति है। डेकार्ट के अनुसार आत्म-ज्ञान के समान कुछ अन्य ज्ञान भी स्पष्ट और विवेकपूर्ण होते हैं। आत्मा को तीन प्रकार के प्रत्ययों का ज्ञान हो सकता है —

(1) आगन्तुक प्रत्यय (Adventitious Ideas) — जो आत्मा में बाह्य जगत की वस्तुओं से उत्पन्न होते हैं।

(2) काल्पनिक प्रत्यय (Fictitious Ideas) – जिन्हें आत्मा स्वयं परिकल्पित कर लेता है।

(3) जन्मजात प्रत्यय (Innate Ideas) — जो आत्मा में जन्म से ही अन्तर्निहित होते हैं। ये प्रत्यय आत्मा की स्वाभाविक शक्ति हैं। इनका ज्ञान आत्मा को धीरे-धीरे होता है। इनके ज्ञान के लिए किसी प्रकार का अनुभव आवश्यक नहीं होता है।

अस्तित्ववादी दार्शनिक सार्त्र के अनुसार आत्मा का अस्तित्व उसके चिन्तन अथवा सारतत्व की तार्किक प्रागपेक्षा है। 'अस्तित्व' (मैं हूं) 'सार' (मैं सोचता हूँ) का पूर्ववर्ती है। चिंतन आत्मा का सारतत्व है। 'मैं सोचता हूँ' के पहले 'मैं हूं' का अस्तित्व होना चाहिए। इस प्रकार अस्तित्ववादी डेकार्ट की मान्यता को उलट देते हैं। यद्यपि डेकार्ट का दावा है कि आत्मा की सत्ता वास्तविक है तथा वह विचार एवं सत्ता के पारस्परिक संबंध की व्याख्या नहीं कर पाता है। वह आत्मा को द्रव्य मान लेने की भूल करता है। उसके द्वारा प्रतिपादित आत्मा एक मनोवैज्ञानिक जीव बन कर रह जाता है। आगे चलकर काण्ट, हेगेल और नव्य हेगेलवादियों ने द्रव्य के रूप में आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं किया।